शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री चालीसा

|| दोहा ||

सत्य धर्म तप पुञ्ज हैं, बाबा गंगाराम |
कलियुग में लीला करी, अदभुत और अभिराम ||
देवकीनंदन- गायत्री, लीला के आधार |
गायत्री के चरित को, प्रणवहुं बारम्बार ||

|| चौपाई ||

नमो-नमो गायत्री माता, सकल सुमंगल सुख की दाता || 1 ||
गंगा सी हे सत्य साधिका, गंगाराम की तुम अराधिका || 2 ||
आश्विन शुक्ला एकम् आई, प्रगटी तू सृष्टि हर्षाई || 3 ||
ज्ञान, भक्ति, करुणा की सागर, महिमा जग में हुई उजागर || 4 ||
विष्णु रूप तेरे मन भायो, बाल्यकाल में दर्शन पायो || 5 ||
निज छवि गंगाराम दिखाये, सुन्दर मधुरम् वचन सुनाये || 6 ||
देवकीनंदन अंश हमारो, भार्या बनकर तेज सम्भारो || 7 ||
त्याग, भक्ति की लीला होगी, जग को सत्य ज्ञान तुम दोगी || 8 ||
देवकीनंदन को परणाई, तू शिव की शक्ति सम आई || 9 ||
त्याग, तपस्या की तू मूरत, सौम्य सलोनी तेरी सूरत || 10 ||
लीला तेरी जाय न वरणी, छः संतन की माँ तू जननी || 11 ||
संतति ने त्यागा सुख सारा, ब्रम्हचर्य जीवन में धारा || 12 ||
धन्य- धन्य गायत्री माता, त्यागमूर्ति तू है जगमाता || 13 ||
लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती रूपा, पाया तुमने रूप अनूपा || 14 ||
तीनों शक्ति तुझमें समाई, सारे जग ने महिमा गाई || 15 ||
ज्ञान मूर्ति हे योग धारिणी, सत्य स्वरूपा, तपोधारिणी || 16 ||
स्नेह हाथ जिनके सिर फेरा, जीवन में हुआ नया सवेरा|| 17 ||
पति के संग में वचन निभायो, पंचदेव को धाम बनायो || 18 ||
तीनों लोकों में जस छाया, कुटिल जनों को ये न भाया || 19 ||

निजजन बंधु बने पराये, ताप- त्रास बहुँ भांति दिखाये || 20 ||

धन-वैभव-सुख पल में छोड़ा, जग के नातों को भी तोड़ा || 21 ||

धर्म राह पे कष्ट उठाये, तेरी पीड़ा कौन बताये || 22 ||

पंचदेव झुंझनूं का प्रांगन, बना तुम्हारे तप का आँगन || 23 ||

सत्य परीक्षा की घड़ी आई, भक्ति की शक्ति दिखलाई || 24 ||

देवकीनंदन धाम सिधारे, चिता की ज्वाला तन को जारे || 25 ||

द्रौपदी भांति हाथ उठाकर, करुणा वचन उचारे जाकर || 26 ||

सूर्यदेव दो आज गवाही, बाबा दिखलादो सकलाई || 27 ||

निश्चल तन तब हाथ उठायो, वर देतो जग में लहरायो || 28 ||

शीश से गंगा नीर बहाया, बालरूप जग को दर्शाया || 29 ||

सुर-नर-मुनि जन ने जस गाया, सती के सत् को शीश नवाया || 30 ||

अनुसुईया, सीता, सावित्री, कलियुग में माता गायत्री || 31 ||

बाबा ने अभिनन्दन कीन्हा, निज चरणों में आसन दीन्हा || 32 ||

मंदिर बना धाम के माही, जॉकी शोभा वरणी न जाही || 33 ||

आशीर्वाद मंदिर में राजे, मानों शिव संग शक्ति साजे || 34 ||

गायत्री संग देवकीनंदन, युगल छवि को सबका वंदन || 35 ||

लक्ष्मी रूप सकल मन भावे, सुख सम्पति घर में बरसावे || 36 ||

शक्ति स्वरूपा संकट हरती, निज भक्तों की रक्षा करती || 37 ||

मंत्र जाप जो करता तेरा, मिट जाता भव बंधन फेरा|| 38 ||

जो भी तुमको निशदिन ध्याये, सकल मनोरथ पूरण पाये|| 39 ||

जयति-जयति जगजननी अम्बा, हरो कष्ट माँ तुम अवलम्बा || 40 ||

|| दोहा ||

दुर्गा रूप प्रकाशिनी, महिमा अगम अपार |

माँ गायत्री करो कृपा, गुण गाये संसार ||

शत-शत वंदन माँ तुम्हें, धरें चरण में माथ |

देवकीनंदन के सहित, सिर पर राखो हाथ ||